Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part – II (Hons)
Paper – IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

1- Locke's : "simple and complex ideas." (लॉक : सरल और जटिल प्रत्यय)

लॉक एक अनुभववादी दार्शनिक थे। लॉक का कहना है कि ज्ञान प्रत्ययों से बनता है। प्रत्यय दो प्रकार के हैं — (1) सरल प्रत्यय (Simple Idea) और (2.) जटिल प्रत्यय (Complex Idea)।

सरल प्रत्यय (Simple Idea) — लॉक के अनुसार जो भावनाएँ संवेदनाओं तथा आत्मचिन्तन से मिलता है उन्हें सरल प्रत्यय कहा जाता है। सरल प्रत्ययों को लॉक ने निरवयव अथवा अनविश्लेष्य (unanalysable) बताया है।

उन्होंने विस्तार तथा काल तारतम्य (duration) को भी सरल प्रत्यय कहा है। जो वास्तव में निरवयव (Part less) नहीं कहे जा सकते।

सरल प्रत्यय और जटिल प्रत्यय में अनेक भेद हैं —

(1) सरल प्रत्यय को ग्रहण करने में हमारी बुद्धि निष्क्रिय रहती है और जटिल प्रत्यय में सक्रिय।

(2) सरल प्रत्यय एक ही प्रकार की इन्द्रियानुभूति है। सरल प्रत्यय में चार प्रकार माने गये हैं। जबकि जटिल प्रत्यय के असंख्य प्रकार हैं।

सरल प्रत्यय के चार प्रकार अनेक हैं —

(a) एक वाह्य इन्द्रिय से प्राप्त होनेवाला प्रत्यय। जैसे रूप, रस, गन्ध, स्पर्श इत्यादि।

(b) एक से अधिक वाह्य इन्द्रियों से प्राप्त होनेवाले। जैसे —

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

GRB BOOKS

विस्तार, आकृति, गति इत्यादि। (c) अन्तःकरण के संवेदन से प्राप्त होनेवाले जैसे — चिन्तन, मनन, संकल्प, संदेह, स्मृति इत्यादि।

(d) बाह्यइन्द्रिय तथा आन्तरिक इन्द्रिय (मन) के संवेदन से प्राप्त होनेवाले जैसे सुख - दुःख सत्ता शक्ति एकता इत्यादि।

Complex idea (जटिल प्रत्यय) - जटिल प्रत्यय सरल प्रत्ययों के योग से बनती है। सरल प्रत्ययों के निर्माण में हमारी बुद्धि निष्क्रिय होती है क्योंकि यह बाह्य वस्तुओं से जन्य संवेदनाओं को ज्यों का त्यों ग्रहण करती है। इसके बाद हमारा मन सक्रिय हो जाता है। बाह्य वस्तुओं में जन्य संवेदनाएँ सरल प्रत्यय के रूप में हमारी बुद्धि पर अंकित होती है तथा इन्हीं सरल प्रत्ययों को अपनी क्रिया जो भिन्न प्रत्ययों में बदल देती है। भिन्न प्रत्ययों को निर्माण में छः अवस्थाओं का वर्णन किया गया है।

(i) सरल प्रत्ययों का ग्रहण - सरल प्रत्यय संवेदना तथा स्वसंवेदना के द्वारा ही बुद्धि को प्राप्त होते है। बुद्धि निष्क्रिय होकर इन्हें यथावत ग्रहण करती है।

(ii) सरल प्रत्ययों का धारण - प्रत्ययों को धारण करना स्मृति का काम है। अतः स्मृति न रहे तो प्राप्त संवेदनाएँ विस्मृत हो जायेगी तथा आगे की ज्ञान प्रक्रिया भी समाप्त हो जायेगी। ज्ञान के लिए आवश्यक है कि स्मृति

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

3

Notes

संवेदनाओं का धारण करे।

(iii) प्रत्ययों का पृथक्करण

वस्तुतः बुद्धि की पहली सक्रिय अवस्था यही है। बुद्धि को असंख्य संवेदना प्राप्त होती है। बुद्धि उन सबों को अलग-अलग वर्गों में विभाजित करती है। यदि यह पृथक्करण न हो तो सरल प्रत्यय एक ही साथ रहेंगी तथा किसी विशेष भिन्न प्रत्यय की उत्पत्ति नहीं होगी अतः पृथक्करण विशिष्टता का द्योतक है।

(iv) सरल विज्ञानों का संतुलन :— संतुलन का अर्थ है विज्ञानों को क्रम से व्यवस्थित करना। यहाँ समान सरल प्रत्ययों की ही व्यवस्था कर बुद्धि इन्हें संतुलन करती है।

(v) प्रत्ययों का मिश्रण — इस अवस्था में बुद्धि संतुलित प्रत्ययों का योग कराती है। यह अवस्था प्रत्ययों के पारस्परिक सम्बन्ध का सूचक है।

(vi) नामकरण — हम किसी व्यक्ति या वस्तु विशेष का नामकरण उसके सार गुणों के आधार पर ही करते हैं। सर्वप्रथम हम किसी वर्ग के सामान्य और सार गुणों को एकत्रित करते हैं तथा उसे एक संज्ञा का नाम प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति विशेष का द्योतक है।

संक्षेप में लॉक के अनुसार जटिल प्रत्ययों का विश्लेषण यों किया जा सकता है। सर्वप्रथम हमारी बुद्धि संवेदन तथा स्वसंवेदन के द्वारा विभिन्न सरल प्रत्ययों

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

को प्राप्त करती है तथा उन्हें एक स्थान मिला देती है जिसे Compound कहते हैं। पुन: बुद्धि क्रम से इनकी व्यवस्था करती है, यह सरल प्रत्ययों का नियोजन है। इस क्रम से सरल प्रत्ययों के क्रमिक सम्बन्ध का पता चलता है। इसके बाद बुद्धि सरल प्रत्ययों को विश्लेषण के भाग और गुण के अनुसार अलग-अलग करती है। जैसे — संसार, सोना, सौन्दर्य, मनुष्य आदि जटिल प्रत्यय हैं जो सरल प्रत्ययों के योग से बनती हैं।